पंजाब केसरी 10/04/2025

यदि जैव विविधता सुरक्षित रही, तभी मानव सभ्यता प्रगति कर सकती है : डा. नरेंद्र सिंह

गांधी मैमोरियल नैशनल कालेज में 'अवसर और चुनौतियां : वैश्विक सतत विकास के लिए कृषि, पर्यावरण और जैविक विज्ञान' विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

अम्बाला, 9 अप्रैल (बलराम): कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा. नरेंद्र सिंह ने कहा कि प्लांट टिश्यू कल्चर तथा जैव विविधता आज के समय में बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। इन विषयों का हमें बहुत ही बारीकी से अध्ययन करना पड़ेगा। यदि हमें मानव सभ्यता को प्रगति के पथ पर अग्रसर करना है तो हमें आज के समय में क्लाइमेट चेंज जैसे विषयों पर बहुत ही ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। यदि जैव विविधता सुरक्षित रही, तभी मानव सभ्यता प्रगति कर सकती है।

वह मंगलवार को अम्बाला छावनी स्थित गांधी मैमोरियल नैशनल कालेज के वनस्पति विज्ञान, जीव विज्ञान एवं रसायन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को मुख्य अतिथि के तौर पर संबोधित कर रहे थे। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा सरकार द्वारा प्रायोजित की गई थी जिसका विषय 'अवसर और चुनौतियां : वैश्विक सतत विकास के लिए कृषि, पर्यावरण और जैविक विज्ञान' था।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेते विशेषज्ञ। (देवव्रत)

समापन सत्र में वन एवं पर्यावरण मंत्रालय के तहत जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वैज्ञानिक डा. कमल सैनी ने मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय संगोष्ठी में भागीदारी की। कालेज के प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने अतिथियों को पौधा देकर सम्मानित किया।

अपने व्याख्यान के दौरान वैज्ञानिक डा. कमल सैनी ने हिमालयन जैव विविधता पर प्रकाश डाला, जोकि समुद्र तल से 6000 मीटर ऊंचाई पर पाए जाते हैं। उन्होंने सतत विकास के लिए जैव विविधता संरक्षण के उपाय व प्रबंधन पर जोर दिया। इसके साथ ही संगोष्ठी के अन्य प्रतिभागियों को 'बर्फ के मरुस्थल' के अनुभव और जैव विवधिता के अध्ययन में उपयोग होने वाले टूल्स पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफैसर डा. सोमवीर जाखड़ ने कहा कि बड़ी तेजी से पर्यावरण बदलाव का असर आज जैव विविधता के साथ-साथ मानव सभ्यता के ऊपर नजर आ रहा है तथा यह हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती बन गया है।

हालांकि, समय-समय पर विश्व स्तर पर इन चुनौतियों से निपटने तथा सभी देशों की भागीदारी सुनिश्चित करने को लेकर विभिन्न कानूनी कार्रवाई की जा रही हैं, फिर भी वन कटाव एवं कृषि में अधिक मात्रा में पैस्टिसाइड का प्रयोग आज मानव सभ्यता के लिए खतरा बनता जा रहा है।

प्राचार्य डा. रोहित दत्त ने बताया कि आज के समय में इस तरह की राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करना बड़ा ही प्रासंगिक है। संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास के सिद्धांतों में भी इन सभी तत्वों को महत्वपूर्ण रूप से शामिल किया गया है।

इससे पूर्व, राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजिका डा. मीनू राठी ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के थीम के बारे में सभी को अवगत करवाते हुए कहा कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य पर्यावरण बदलाव की वजह से कृषि पर्यावरण और जैविक विज्ञान का वैश्विक स्तर पर चुनौतियां एवं अवसरों को पहचान कर उनका समाधान करना है। संगोष्ठी में डा. मुकेश कुमार, डा. सुनीता राणा, डा. कुलदीप यादव, डा. शिखा जग्गी, डा. अनुपमा सिहाग, डा. धर्मवीर सैनी व डा. राजेंद्र देसवाल सहित हरियाणा के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के साथ-साथ पंजाब, चंडीगढ़, राजस्थान, बंगाल, त्रिपुरा, केरल, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों एवं शोध छात्रों ने ऑफलाइन एवं ऑनलाइन माध्यम से भाग लिया।